an>

Title: Regarding welfare of beedi workers of Begusarai in Bihar.

डॉ. भोला सिंह (बेगूसराय) : उपाध्यक्ष महोदय, शिकस्ता कब्रों की लाशें भी मुझसे बेहतर हैं, कम से कम उनको कयामत का इंतजार तो है। बिहार में और विशेषकर बेगूसराय, जो हमारा संसदीय क्षेत्र है, वहां 25 हजार बीड़ी मजदूरों की जिंदगी वेदना और कराह से भरी हुई है। उनकी बेबस जिंदगी, बेपनाह जिंदगी, एक बरस से वे हड़ताल पर हैं। उनकी मजदूरी तय है कि 197 रुपये उन्हें मजदूरी मिलेगी, लेकिन उन्हें 85 रुपये मजदूरी मिलती है। मिट्टी के घरों में रहना, पेयजल का अभाव होना, रोटी के टुकड़े के लिए तरसना, वहां शूमेव जयते लहूलुहान है।

महोदय, मैं आपके माध्यम से इस ग्रेट सदन, सॉवरेन सदन में जहां इतिहास अपने को कई बार दोहराता है, भारत सरकार के श्रम विभाग से आग्रह करना चाहता हूं कि अल्पसंख्यक मजदूरों को बीड़ी बनाने के कारण टी.बी. का शिकार होना पड़ता है। उनके बाल-बच्चे मरहूम होने लगते हैं, समाज में वे दीनता के प्रतीक हैं। जब एक तरफ देश विकास कर रहा है, समाज विकास कर रहा है, मजदूर मध्यम वर्ग होते चले जा रहे हैं, एक नई दृष्टि उपस्थित हो रही है, ऐसे समय में इन बीड़ी मजदूरों का रो-रोकर जीवन व्यतीत करना, उनकी महिलाओं के द्वारा तरसते हुए और रोते हुए जीवन व्यतीत करना, यह हमारे दामन पर एक बहुत बड़ा कलंक है।

मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि विकास के बहुत सारे आयाम हुए हैं। इंद्रधनुषी विकास की योजनाएं जमीन पर उतर रही हैं, परंतु ये गरीब, बेसहारा, बेपनाह, अल्पसंख्यक बीड़ी मजदूर, जिनके बच्चे रोटी की तलाश में टी.बी. के शिकार हैं, जिनके बच्चे जिंदगी की हताशा में जी रहे हैं। कोई भी घटना उन्हें मौत की नींद सुला सकती है। इसलिए मैं भारत सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करता हूं कि वह पदाधिकारियों की एक टीम बनाकर उनकी समस्याओं की जांच करे और उनका निदान करे। यही मेरी आपके माध्यम से सरकार से विनती है। धन्यवाद।